C.B.S.E

विषय : हिन्दी 'अ'

कक्षा : 9

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।
2) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।
4) एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5) दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6) तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड – क

[अपठित अंश]

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (2×4=8) (1×2=2) [10]

एक समय की बात है। कन्नौज में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे नित्य लोगों को बुराईयों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। उनकी वाणी का अच्छा प्रभाव होता था। लोग भी उनका मान-सम्मान करते थे। एक दिन वे नशे की बुराईयाँ लोगों को बतला रहे थे। भीड़ में से एक व्यक्ति बाहर निकला और बोला, महात्मन, मुझे अफ़ीम खाने की आदत है, मैं उसे छोड़ना चाहता हूँ, पर छूटती ही नहीं। क्या आप मुझे इसका कोई उपाय बतलाएँगे?

महात्मा ने कहा, अवश्य, तुम आज शाम को मेरे आश्रम पर आना, मैं तुम्हें इसकी तरकीब समझाऊँगा। शाम के समय जब वह व्यक्ति आश्रम पर पहुँचा तो महात्मा जी भजन में लगे थे। वह बैठकर प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर

बाद महात्मा जी निवृत्त हुए और उठकर इधर-उधर टहलने लगे। वह व्यक्ति भी महात्मा जी का अनुसरण करने लगा।

कुछ समय यों ही बीत गया। अधीरता-से उस व्यक्ति ने महात्मा जी से पूछा, महात्मा जी, मैं वह तरकीब पूछने आया हूँ जिससे अफ़ीम खाने की आदत छूट सके।

महात्मा जी ने एक दृष्टि उस व्यक्ति पर डाली और बोले, तो तुम सचमुच अफीम की आदत छोड़ना चाहते हो?

जी! उस आदमी का उत्तर था, मैं इससे बहुत परेशान और दुःखी हूँ।

ठीक! कहकर महात्मा जी ने एक लता को अपनी बाहु में लपेट लिया और बोले, मैं तुम्हें इसका उपाय कैसे बताऊँ यह लता तो मुझे छोड़ ही नहीं रही है।

पहले तो वह आदमी भौंचक्का-सा होकर महात्मा जी को देखने लगा, फिर कुछ झिझककर बोला, महात्मन, क्षमा करें, क्या लता भी आदमी को पकड़ सकती है?

महात्मा बोले, अरे भाई! मैं भी यही कहता हू कि क्या कोई भी बुराई आदमी को पकड़ सकती है? तुम दृढ़ संकल्प के साथ शराब को छोड़ो, तो छूटेगी कैसे नहीं!

आदमी ने महात्मा को प्रणाम किया और घर लौट गया।

1. कन्नौज में कौन रहते थे और वे क्या करते थे? एक दिन वे क्या बतला रहे थे?

   उत्तर : कन्नौज में एक परोपकारी महात्मा रहते थे। वे नित्य लोगों को बुराईयों से दूर रहने का उपदेश दिया करते थे। एक दिन वे नशे की बुराईयाँ लोगों को बतला रहे थे।

2. आदमी आश्रम में पहुँचकर किसका इंतजार करने लगा और क्यों?

उत्तर : आदमी आश्रम में पहुँचकर महात्मा जी के भजन से उठने का इंतज़ार करने लगा, क्योंकि वह उनसे अफ़ीम छोड़ने की तरकीब जानना चाहता था।

3. महात्मा जी ने लता को क्यों लपेट लिया तथा वे आए हुए आदमी को क्या समझाना चाहते थे?

उत्तर : महात्मा जी ने नशे की बुराईयों को अप्रत्यक्ष रूप से समझाने के लिए लता को लपेट लिया। इसके द्वारा वे समझाना चाहते थे कि बुराईयाँ इनसान को नहीं पकड़ती, बल्कि इनसान ही बुराईयों को पकड़ लेता है।

4. आदमी भौंचक्का क्यों रह गया?

उत्तर : महात्मा जी ने लता को अपने हाथ में लपेटकर कहा कि वे उसे तरकीब तो अवश्य बताते, पर इस लता ने उन्हें पकड़ लिया है तथा छोड़ ही नहीं रही है। यह सुनकर आदमी भौंचक्का रह गया।

5. उपर्युक्त गद्यांश से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश से हमें शिक्षा मिलती है कि बुराईयाँ इनसान को नहीं पकड़ती बल्कि इनसान बुराईयों को पकड़ता है, तथा वह जब चाहे दृढ़-निश्चय के बल पर बुराई को छोड़ सकता है।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दें।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'दृढ़ संकल्प' है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. क) निम्नलिखित शब्दों में उचित प्रत्यय पहचानिए: [1]

भुलावा, फिरौती

उत्तर : आवा, औती

ख) निम्नलिखित शब्दों में उचित उपसर्ग पहचानिए: [1]

अतिवृष्टि, आलेख

उत्तर : अति, आ

ग) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और उपसर्ग को अलग कीजिए: [1]

उपग्रह, प्रतिवर्ष

उत्तर : उप+ग्रह, प्रति+वर्ष

घ) निम्नलिखित शब्दों में मूल शब्द और प्रत्यय को अलग कीजिए : [1]

चलन, पालनहार

उत्तर : चल + अन, पालन + हार

ङ.) निम्नलिखित समस्त पदों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए। [2]

- गिरिधर
- नमक-मिर्च

समस्त पद	विग्रह	समास
गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	बहुव्रीहि
लेन-देन	लेन और देन	द्वंद्व

च) निम्नलिखित विग्रहों का समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए। [2]

- पाँच तत्वों का समूह
- मृत्यु तक

विग्रह	समस्त पद	समास
पाँच तत्वों का समूह	पंचतत्व	द्विगु
मृत्यु तक	आमरण	अव्ययीभाव समास

छ) अर्थ के आधार पर निम्न के वाक्य भेद बताइए: [4]

1) वह एक अच्छी लड़की है।

उत्तर : विधानार्थक वाक्य

2) क्या आप कल पाठशाला जायेंगे?

उत्तर : प्रश्नार्थक वाक्य

3) आप यहाँ बैठ जाइए।

उत्तर : आज्ञार्थक वाक्य

4) संभवत: वह पहुँच गया होगा।

उत्तर : संदेहार्थक वाक्य

ज) निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए: [4]

1. कर कह जाता कौन कहानी

   उत्तर : अनुप्रास अलंकार

2. माला फेरत जुग भया, फिरा ना मन का फेर

   उत्तर : यमक अलंकार

3. सुरवन को ढूँढत फिरत, कवि व्यभिचारी, चोर

उत्तर : श्लेष अलंकार

4. हाय! फूल सी कोमल बच्ची

हुई राख की ढ़ेरी।

उत्तर : उपमा अलंकार

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक और पूरक पुस्तक]

प्र. 3. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए: [3×2=6]

मुझे लगता है, तुम किसी सख्त चीज़ को ठोकर मारते रहे हो। कोई चीज़ जो परत-पर-परत सदियों से जम गई है, उसे शायद तुमने ठोकर मार-मारकर अपना जूता फाड़ लिया। कोई टीला जो रास्ते पर खड़ा हो गया था, उस पर तुमने अपना जूता आज़माया।

तुम उसे बचाकर, उसके बगल से भी तो निकल सकते थे। टीलों से समझौता भी तो हो जाता है। सभी नदियाँ पहाड़ थोड़े ही फोड़ती हैं, कोई रास्ता बदलकर, घूमकर भी तो चली जाती है।

तुम समझौता कर नहीं सके। क्या तुम्हारी भी वही कमज़ोरी थी, जो होरी को ले डूबी, वही 'नेम-धरम' वाली कमज़ोरी? 'नेम-धरम' उसकी भी ज़ंजीर थी। मगर तुम जिस तरह मुसकरा रहे हो, उससे लगता है कि शायद 'नेम-धरम' तुम्हारा बंधन नहीं था, तुम्हारी मुक्ति थी!

तुम्हारी यह पाँव की अँगुली मुझे संकेत करती-सी लगती है, जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ़ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?

तुम क्या उसकी तरफ़ इशारा कर रहे हो, जिसे ठोकर मारते-मारते तुमने जूता फाड़ लिया?
मैं समझता हूँ। तुम्हारी अँगुली का इशारा भी समझता हूँ और यह व्यंग्य-मुसकान भी समझता हूँ।

1. उपर्युक्त गद्यांश में किस व्यक्तित्व की चर्चा की गई है?

   उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश में कथा सम्राट प्रेमचंद के व्यक्तित्व की चर्चा की गई है।

2. पाठ में 'टीले' शब्द का प्रयोग किन संदर्भो को इंगित करने के लिए किया गया होगा?

   उत्तर : टीला रस्ते की रुकावट का प्रतीक है। इस पाठ में टीला शब्द सामाजिक कुरीतियों, अन्याय तथा भेदभाव को दर्शाता है क्योंकि यह मानव के सामजिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न करता हैं।

3. जिसे तुम घृणित समझते हो, उसकी तरफ हाथ की नहीं, पाँव की अँगुली से इशारा करते हो?- पंक्तियों में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

   उत्तर : प्रेमचंद ने सामाजिक बुराइयों को अपनाना तो दूर उनकी तरफ देखा भी नहीं। प्रेमचंद गलत वस्तु या व्यक्ति को हाथ से नहीं पैर से ही सम्बोधित करना उचित समझते है।

प्र. 4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. मैना जड़ पदार्थ मकान को बचाना चाहती क्यों थी?

   उत्तर : मैना अपने मकान को बचाना चाहती थी क्योंकि वह मकान उसकी पैतृक धरोहर थी। उसी में मैना की बचपन की, पिता की, परिवार

की यादें समाई हुई थीं। वह उसके जीवन का भी सहारा हो सकता था। इसलिए वह उसे बचाना चाहती थी।

2. 'मैं उत्पन्न हुई तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।' इस कथन के आलोक में आप यह पता लगाएँ कि-लड़कियों के जन्म के संबंध में आज कैसी परिस्थितियाँ हैं?

उत्तर : आज लड़कियों के जन्म के संबंध में स्थितियाँ थोड़ी बदली हैं। आज शिक्षा के माध्यम से लोग सजग हो रहें हैं। लड़का-लड़की का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा हैं। आज लड़कियों को लड़कों की तरह पढ़ाया-लिखाया भी जाता है। परंतु लड़कियों के साथ भेदभाव पूरी-तरह समाप्त नहीं हुआ है। आज भी भ्रूण और दहेज हत्याएँ हो रही हैं, इनके लिए सरकार कड़े कानून बना रहीं है।

3. उस समय के तिब्बत में हथियार का क़ानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर : उस समय तिब्बत के पहाड़ों की यात्रा सुरक्षित नहीं थी। लोगों को डाकुओं का भय बना रहता था। डाकू पहले लोगों को मार देते और फिर देखते की उनके पास पैसा है या नहीं। तथा तिब्बत में हथियार रखने से सम्बंधित कोई क़ानून नहीं था। इस कारण लोग खुलेआम पिस्तौल बन्दूक आदि रखते थे। साथ ही, वहाँ अनेक निर्जन स्थान भी थे, जहाँ पुलिस का प्रबंध नहीं था।

4. सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री के सामने पर्याबरण से संबंधित किन संभावित खतरों का चित्र खींचा होगा कि जिससे उनकी आँखें नम हो गई थीं?

उत्तर : सालिम अली ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह के सामने केरल की साइलेंट-वैली संबन्धी खतरों की बात उठाई होगी। उस समय केरल पर रेगिस्तानी हवा के झोंको का खतरा मंडरा रहा था। वहाँ का पर्यावरण दूषित हो रहा था। प्रधानमन्त्री को वातावरण की सुरक्षा का ध्यान था। पर्यावरण के दूषित होने के खतरे के बारे में सोचकर उनकी आँखें नम हो गई।

5. झूरी की पत्नी ने किसे और क्यों नमकहराम कहा? उसका यह कहना उचित था यह अनुचित अपने विचार लिखें।

उत्तर : झूरी ने अपने बैल हीरा-मोती को किसी कारणवश अपने ससुराल भेज दिया था। हीरा-मोती इस बात को सहन न कर पाएँ और मौका मिलते ही वहाँ से भागकर सीधे अपने घर पहुँच जाते हैं। झूरी की पत्नी ने जब हीरा-मोती को अपने द्वार पर खड़ा पाया तो उसने उसे नमकहराम कहा क्योंकि उसके अनुसार दोनों बैलों ने वहाँ एक दिन भी काम न किया उल्टे वहाँ से भाग आये।

झूरी की पत्नी का बैलों को नमकहराम कहना सर्वथा अनुचित था क्योंकि हीरा-मोती काम के डर से नहीं अपितु अपने मालिक के प्रेम के कारण घर लौट आये थे।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। [2×3=6]

माँ की समझाइश के बाद
दक्षिण दिशा में पैर करके मैं कभी नही सोया
और इससे इतना फायदा जरुर हुआ
दक्षिण दिशा पहचानने में
मुझे कभी मुश्किल का सामना नही करना पड़ा
मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया

और हमेशा मुझे माँ याद आई
दक्षिण को लाँघ लेना सम्भव नहीं था
होता छोर तक पहुँच पाना
तो यमराज का घर देख लेता
पर आज जिधर पैर करके सोओं
वही दक्षिण दिशा हो जाती है
सभी दिशाओं में यमराज के आलीशान महल हैं
और वे सभी में एक साथ
अपनी दहकती आखों सहित विराजते हैं
माँ अब नही है
और यमराज की दिशा भी अब वह नहीं रही
जो माँ जानती थी

1. कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल क्यों नहीं हुई?

उत्तर : कवि को बचपन में माँ ने यह सिखाया था कि दक्षिण दिशा की ओर यमराज का घर होता है अतः वहाँ पर कभी अपने पैर करके नहीं सोना उस तरफ़ पैर रखकर सोना यमराज को नाराज करने के समान है। माँ द्वारा मिली इस सीख के कारण कवि को दक्षिण दिशा पहचानने में कभी मुश्किल नहीं हुई।

2. कवि ने ऐसा क्यों कहा कि दक्षिण को लाँघ लेना संभव नहीं था?

उत्तर : दक्षिण दिशा का कोई ओर-छोर नहीं होता हम यह नहीं कह सकते कि इस निश्चित स्थान पर दक्षिण दिशा समाप्त हो गई है।

3. कवि के अनुसार आज हर दिशा दक्षिण दिशा क्यों हो गई है?

उत्तर : आज मनुष्य का जीवन कहीं भी सुरक्षित नहीं रह गया है। चारों और असंतोष, हिंसा और विध्वंसक ताकतें फैली हुईं हैं।

प्र. 6. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर दीजिए। [2x4=8]

1. मोट खींचता लगा पेट पर जुआ, खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुँआ- पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : अँग्रेज सरकार देश के स्वाधीनता सैनानियों से पशुओं की तरह काम करवाती थी जिससे इन लोगों का स्वाभिमान और देश के प्रति देश प्रेम की भावना ख़त्म हो जाए। परन्तु सैनानी सारे अत्याचार को सहते हुए भी अपनी जिद्द पर अडिग है जिससे अँग्रेज सरकार की सारी अकड़ निकल जाती है।

2. मनुष्य ईश्वर को कहाँ–कहाँ ढूँढता फिरता है?

उत्तर : हिन्दू अपने ईश्वर को मंदिर तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में ढूँढता है तो मुस्लिम अपने अल्लाह को काबे या मस्जिद में और मनुष्य ईश्वर को योग, वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक क्रियाओं में खोजता फिरता है।

3. क्षितिज अटारी गहराई दामिनी दमकी, क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की'-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त पंक्ति का आशय यह है कि नायिका को यह भ्रम था कि उसके प्रिय अर्थात् मेघ नहीं आएँगे परन्तु बादल रूपी नायक के आने से उसकी सारी शंकाएँ मिट जाती है और वह क्षमा याचना करने लगती है।

4. 'सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चे वंचित क्यों हैं?

उत्तर : सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से बच्चों के वंचित रहने के मुख्य कारण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक मज़बूरी है। समाज के गरीब तबके के बच्चों को न चाहते हुए भी अपने माता–पिता का हाथ बँटाना पड़ता है। जहाँ जीविका के लिए इतनी मेहनत करनी पड़े तब सुख–सुविधाओं की कल्पना करना असंभव सा लगता है।

5. सखी ने गोपी से कृष्ण का कैसा रूप धारण करने का आग्रह किया था? अपने शब्दों में वर्णन कीजिये।

उत्तर : सखी, गोपी से कृष्ण का मोहक रूप धारण करने का आग्रह करती है। सखी गोपी से वही सब कुछ धारण करने के लिए कहती है जो कृष्ण धारण करते हैं, सखी ने गोपी से आग्रह किया था कि वह कृष्ण के समान सिर पर मोरपंखों का मुकुट धारण करें। गले में गुंजों की माला पहने। तन पर पीले वस्त्र पहने। हाथों में लाठी थामे वन में गायों को चराने जाए।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दें। [3×2=6]

1. "....आपके लाड़ले बेटे के की रीढ़ की हड्डी भी है या नहीं ...." उमा इस कथन के माध्यम से शंकर की किन कमियों की ओर संकेत करना चाहती है?

उपर्युक्त कथन के माध्यम से उमा शंकर की निम्न कमियों की ओर ध्यान दिलाना चाहती है-

- शंकर का चरित्र अच्छा नहीं है। लड़कियों के हॉस्टल के चक्कर काटते हुए वह पकड़ा जा चूका है।

- उसका अपना निजी कोई व्यक्तित्व नहीं है। वह अपने पिता के पीछे चलने वाला बेचारा जीव है, जैसा कहा जाता है वैसा ही करता है।
- वह शारीरिक रूप से भी समर्थ नहीं है। वह शरीर से कमजोर, झुककर तथा उससे तन कर भी बैठा भी नहीं जाता।

2. माटीवाली को टिहरी शहर किस रूप में जाना पहचाना जाता था?

उत्तर : माटीवाली को टिहरी शहर में माटीवाली के रूप में पहचाना जाता था। क्योंकि पूरे टिहरी शहर में केवल वही अकेली माटी वाली थी। उसका कोई प्रतियोगी नहीं था। माटीवाली की लाल मिट्टी हर घर की आवश्यकता थी, जिससे चूल्हे-चौके की पुताई की जाती थी। इसके बिना किसी काम नहीं चलता था। इसलिए सभी उसे जानते थे तथा उसके ग्राहक थे। वह पिछले अनेक वर्षों से शहर की सेवा कर रही थी। साथ ही माटीवाली एक हँसमुख स्वभाव वाली महिला थी। इस कारण स्वाभाविक रूप से सभी लोग उसे जानते थे।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 8. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

प्लास्टिक की थैलियाँ - एक अभिशाप

आधुनिक काल में विज्ञान नें जहाँ मनुष्य को अनेक सुख-सुविधाएँ प्रदान की हैं, वहीं विज्ञान ने अनेक भयंकर समस्याओं को जन्म दिया है। प्लास्टिक की समस्या भी ऐसी ही समस्या है। आज से 20-25 वर्ष पूर्व इस प्रकार की कोई समस्या नहीं थी, लोग सामान लाने के लिए कपड़े के थैलों का प्रयोग करते थे और छोटे सामान के लिए कागज़ के लिफाफों का उपयोग होता था, किंतु आज सड़क, बाग-बगीचे हर जगह प्लास्टिक की थैलियाँ उड़ती दिखाई

देती हैं। प्लास्टिक की ये थैलियाँ अनेक रोगों का कारण तो बनती ही हैं, पशुओं की मौत का कारण भी हैं। यदि इन्हें जलाया जाता है तो इनका दुर्गंध युक्त धुआँ श्वास संबंधी रोगों का कारण बनता है। आज इस प्रकोप से बचने का सबसे अच्छा उपाय है कि इनका उपयोग बंद कर दिया जाए। इस प्रकार समाज को सचेत कर प्लास्टिक के प्रकोप से बचाया जा सकता है।

प्रकृति

मनुष्य प्रकृति से सदा से जुड़ा हुआ है। प्रकृति परमात्मा की अनुपम कृति है। प्रकृति का पल-पल परिवर्तित रुप उल्लासमय है, हृदयाकर्षक है। वह सर्वस्व लुटाकर भी हँसती रहती है। प्रकृति अपने हजार रूपों में हमारे सामने खुशियों का ख़जाना लाती है। प्रकृति हमें सिखाती है कि जीवन हरपल आनंद से सराबोर है। नदियों का कल कल करता संगीत, झूमते गाते पेड़, एवं छोटे छोटे जीव हमें सिखाते हैं कि जीवन को ऐसे जियो की जीवन का हर पल खुशियों की सौगात बन जाये।

पर्वत कहता शीश उठाकर, तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ।
सोहनलाल द्विवेदी

प्रकृति की गोद में वो सुख है, जो हज़ारों की संपत्ति पाकर भी नहीं मिलता। इसके सानिध्य में रहकर मनुष्य जीने की प्रेरणा पाता है।

पुस्तकें पढ़ने की आदत

पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती है। आत्म उन्नति करनी है तो पुस्तक से बढ़कर कोई सहायक नहीं है। अभी कुछ वर्षों तक पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने के लिए अनूमन सभी समय निकाल ही लेते थे परन्तु हाल के कुछ वर्षों में लोगों की पढ़ने की आदत तकनीकी विकास के कारण कम होती जा रही है। बच्चों में भी पढ़ाई का बोझ कुछ ज्यादा ही बढ़ गया है। प्रतिस्पर्धा

के इस युग में सभी आगे ही बढ़ना चाहते है इसलिए भी अब हल्की-फुल्की पुस्तकें लोग पढ़ना नहीं चाहते हैं। महानगरीय व्यस्तता भी इसका एक कारण है लोग इतना लंबा सफ़र कर घर पहुँचते हैं कि चाहकर भी वे अपनी पसंदीदा पुस्तक नहीं पढ़ पाते। परंतु पुस्तक पढ़ने से न केवल हमारे दिमाग का अभ्यास होता है बल्कि पुस्तकें हमारे तनाव को भी कम करती है। पढ़ने से मन को सुकून मिलता है फलस्वरूप नींद भी अच्छी आती है। पढ़ने से व्यक्ति की याददाश्त भी बढ़ती है। पुस्तकें ही मनुष्य के ज्ञान के साथ चरित्र-निर्माण में अहम् भूमिका निभाती है।

प्र. 9. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. आपके विदयालय में कुछ अतिथि आए थे, जिनकी देखभाल की जिम्मेदारी आपको सौंपी गई थी। अपनी माता जी को पत्र लिखकर बताइए कि वे अतिथि विद्यालय में क्यों आए थे और उनके लिए क्या-क्या किया।

छात्रावास
यशवंत स्कूल
नई दिल्ली
दिनाँक: 8 नवंबर, 20XX

पूजनीय माताजी,
सादर चरण स्पर्श।
आशा हैं कि आप सकुशल एवं स्वस्थ होंगे। मैं ठीक हूँ और परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूँ।
मेरे विदयालय में वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमें अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ अंधेरी नगरी चौपट राजा नामक नाटक का मंचन भी किया गया। इस कार्यक्रम की तैयारी कई दिन पहले ही आरंभ हो गई

थी। इस कार्यक्रम के लिए सभी विद्यार्थियों को कुछ न कुछ जिम्मेंदारी दी गई थी। मुझे मुख्य अतिथि की देखरेख की जिम्मेंदारी सौंपी गई थी। मुझे पूरे समय उनके साथ ही रहना था ताकि उन्हें जो भी चाहिए उसकी व्यवस्था में शीघ्र करवा दूँ।

आपके आर्शीवाद से मैंने अपनी जिम्मेदारी बहुत अच्छी तरह निभाई।

अतिथि, मेरे शिक्षक से मेरी बहुत प्रशंसा कर रहे थे।

पिताजी को मेरा प्रणाम एवं छोटी को मेरा प्यार दीजिएगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,

गौरव।

2. विद्यालय के प्रधानाचार्य को आर्थिक सहायता या छात्रवृति के लिए प्रार्थना-पत्र लिखिए।

सेवा में,

प्रधानाचार्य

लोकमान्य विद्या निकेतन

इन्दौर

दिनाँक: 15 अप्रैल, 20 xx

विषय - छात्रवृति के लिए प्रार्थना।

मान्यवर महोदय

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय की कक्षा आठवी 'ब' की छात्रा हूँ। गत वर्ष से मेरे पिताजी का स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उनका कामकाज ठप्प हो गया है तथा परिवार में आमदनी का कोई अन्य साधन न होने के कारण स्थिति और भी खराब हो गई है। मेरी माताजी एक अशासकीय विद्यालय में शिक्षिका है पर उनके अल्प वेतन से परिवार का गुजारा हो पाना असंभव है।

मान्यवर, मैं पिछले तीन वर्षो से अपनी कक्षा में सर्वोच्च अंक लेकर उत्तीर्ण होती रही हूँ। आपसे अनुरोध है कि मुझे विद्यालय की ओर से आर्थिक सहायता या छात्रवृति प्रदान करें जिससे मैं आगामी कक्षाओं की पढ़ाई जारी रख सकूँ।

आपकी इस कृपा एवं सहयोग के लिए मैं आजीवन आपकी आभारी रहूँगी।

सधन्यवाद

आपकी आज्ञाकारिणी शिष्या

रमा मालू

कक्षा - आठवी (ब)

प्र. 10. निम्नलिखित किसी एक विषय पर 25-30 शब्दों में संवाद लेखन करें। [5]

1. दूरदर्शन के कार्यक्रमों के विषय में माता और पुत्री के बीच होनेवाला संवाद लिखिए।

माता : आजकल दूरदर्शन पर कार्यक्रमों की होड़ में अच्छे-बुरे का ध्यान नहीं रह गया। मैं तो कहती हूँ- इससे दूर ही अच्छे।

पुत्री : हाँ, माँ! ऐसा ही है, पर कुछ अच्छे भी हैं।

माता : हो सकता है, पर अधिकांश कार्यक्रम तो ऐसे हैं जिनका न कोई उद्देश्य है और न ही कोई औचित्य।

पुत्री : परंतु कितने ऐसे कार्यक्रम भी आते हैं जो हमारे ज्ञान को बढ़ाते हैं तथा स्वस्थ मनोरंजन भी करते हैं।

माता : मुझे तो अधिकतर फिल्मी कार्यक्रम ही देखने मिलते है। इसका नैतिक मूल्यों से कोई संबंध ही नहीं। आज ये विद्यार्थी के पतन का कारण बने हुए हैं।

पुत्री : हाँ, माँ! परंतु अच्छे कार्यक्रमों का चयन कर कुछ समय के लिए देखने में कोई बुराई नहीं।

माता : तुम ठीक कह रही हो, परंतु यह बात याद रखना।

2. पति-पत्नी के मध्य गहने खरीदने से संबंधित संवाद लिखें।

पति : जन्मदिन की बधाईयाँ।

पत्नी : धन्यवाद।

पति : महोदया को उपहार में क्या चाहिए?

पत्नी : सोने के कंगन।

पति : सोने के दाम बहुत बढ़े हुए है। कंगन तो बहुत महँगे होंगे।

पत्नी : आप ने पूछा तो मैंने बताया।

पति : हाँ, मैं सिर्फ़ इतना कह रहा हूँ कि कुछ और ले लो। मेरे पास 25 हजार है।

पत्नी : उतने में तो सिर्फ़ छोटी चेन आएगी।

पति : ठीक है, तुम रोज पहन सकती हो।

पत्नी : ठीक है, मैं अभी तैयार होकर आती हूँ।

पति : जल्दी आना।